thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 15 रोहतक, 14 सितम्बर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

सत्य ही स्वर्ग का सोपान है

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

लोक में एक ही बात है जिसको बहुत कम संख्या में लोग जानते हैं, जैसे समुद्र को पार करने के लिए नौका (समुद्री जहाज) की आवश्यकता है, ठीक वैसे ही सत्य से स्वर्ग को प्राप्त किया जा सकता है। सत्य के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा साधन नहीं है।

वेद के विद्वानों ने मनुष्य के कार्य साधने के लिए तीन उपाय गिनाए हैं, वे अधम, मध्यम और उत्तम हैं। अर्थात् संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं—उत्तम, मध्यम और अधम। उत्तम—उत्तम पुरुष की श्रेणी में जो पुरुष आते हैं, वह इस प्रकार से है—जो व्यक्ति आत्मा और परमात्मा की जानकर यथाशक्ति कर्म करता हुआ नित्य धर्म में स्थिर रहकर सुख-दुःख को सहन करता है, सांसारिक विषय जिसे अपनी ओर आकर्षित नहीं करते हैं, वह पुरुष उत्तम है।

जो अच्छे कामों को करता है, निन्दित कार्यों को कभी नहीं करता, आस्तिक है और श्रद्धावान है, जिसकी बुद्धि हमेशा सांसारिक कार्यों को करती हुई भी धार्मिक कार्यों में लगी रहती है और जो धन की केवल एकमात्र जीवनयापन का साधन समझता है। अर्थात् व्यर्थ के कार्यों के लिये धनसंग्रह की इच्छा कभी नहीं करता, वह उत्तम पुरुष कहलाता है।

जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूर्ण पुरुषार्थ करते हैं और जो धनसंग्रह में ईमानदारी और धार्मिकता को प्राथमिकता देते हैं, वे कभी अशोभनीय ढंग से धन अर्जित करने की कामना भी नहीं करते हैं। अर्थात् अयोग्य वस्तु की इच्छा नहीं करते, नष्ट हुई वस्तु का शोक नहीं करते, आपत्ति आने पर कभी धैर्य को नहीं छोड़ते, अर्थात् कभी विचलित नहीं होते, ऐसे व्यक्ति अच्छे कर्मों में रुचि रखते हैं और दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। कभी दूसरों को क्षति पहुंचाने का मन में विचार भी नहीं लाते, वही उत्तम पुरुष होते हैं।

जो मनुष्य सम्मान की प्राप्ति पर हर्षित नहीं होता और अपमान होने पर दुःखित नहीं होता, कभी क्षुब्ध नहीं होता, अपमानित होकर भी पुरुषार्थ, कल्याण की भावना को कभी नहीं छोड़ता, वही उत्तम है।

योगेश्वर संन्यासी जो अपने को स्वर्ग उपयोगी बनाये और दूसरों को भी स्वर्ग का पथ-प्रदर्शन करे, वही संन्यासी है और जो धर्मयुद्ध में मारा जाये, वही शूरवीर योद्धा है। जो परस्त्री का कभी गमन नहीं करते, कुदृष्टि से नहीं देखते, वही समाज में सम्मानित होते हैं।

जिनमें ये अवगुण नहीं होते वे महान् पुरुष होते हैं, दूसरों की स्त्रियों में आसक्ति, जुआ खेलना, मद्यपान करना, कटु भाषण बोलना, झूठ बोलना, धन का दुरुपयोग करना, दूसरे के प्रति द्वेषभाव रखना, दूसरे के धन को छीनना-हड़पना, छल-कपट से दूसरे को क्षति पहुंचाना, शिकार करना, विद्वानों की उपेक्षा, माता-पिता का सत्कार न करना, स्त्री का सम्मान न करना अर्थात् उसको मारना, पीटना, चुगली करना, अपने से निर्बल को कष्ट देना, राजद्रोही आदि-आदि।

जो मनुष्य प्राणिमात्र के कल्याण के लिए सदैव कार्य करता है, उसमें उसको चाहे कितने ही कष्ट उठाने पड़े, वह उसको नहीं छोड़ता, जैसे हमारे सम्मुख महर्षि दयानन्द का जीता-जागता प्रमाण है। जिस व्यक्ति के कार्य को सर्दी, गर्मी, भय अथवा विषयों के प्रति आसक्ति, गरीबी या अमीरी, लोभ, मोह आदि नहीं रोक सकते, वही उत्तम व्यक्तित्व का व्यक्ति है।

उत्तम पुरुष कभी अपनी बुद्धि से विचारे बिना कोई कार्य नहीं करता और प्रायः दुष्कर्मों में संलिप्त वही होते हैं, जो बिना अपनी बुद्धि से ठीक-गलत, पाप-पुण्य, सत्य-असत्य आदि का विचार नहीं करते और सुनी-सुनाई या किसी द्वारा कही बात पर विश्वास कर लेते हैं। उदाहरणतः जैसे पुराणों व अन्य बहुत-सी पुस्तकों में लिखी गई काल्पनिक मनघड़न्त किस्से-कहानियों को कोई सुनाता है तो उस पर बिना बिचारे ही ठीक समझ लेते हैं। इसका एक उदाहरण नहीं लाखों उदाहरण हैं कि लोग बिना सोचे-विचारे ही सुनकर गलत बातों पर विश्वास कर लेते हैं। कालाग्निरुद्रोपनिषद् में भस्म लगाने का विधान लिखा है और **त्रायुषं जमदग्ने** यजुर्वेद में आंख के अश्रुपात से जो वृक्ष उत्पन्न हुआ इसी का नाम रुद्राक्ष है। एक भी रुद्राक्ष धारण करे तो सब पापों से छूटकर स्वर्ग को जाये और यमराज तथा नरक का डर ही न रहे। महर्षि दयानन्द जो उच्च कोटि के विचारक, सत्य-पथ वेदमार्ग का प्रदर्शन करने वाले, सत्य-असत्य का ज्ञान कराने वाले और बुद्धि से बिना विचारे कोई कार्य का उपदेश करने वाले सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में उक्त का उत्तर देते हुए लिखते हैं—भला यह कितनी मूर्खता की बात है कि आंख के अश्रुपात से वृक्ष उत्पन्न हो सकता है। क्या परमेश्वर के सृष्टिक्रम को कोई अन्यथा कर सकता है? जैसा जिस वृक्ष का बीज परमात्मा ने रचा है, उसी से वह वृक्ष उत्पन्न हो सकता है, अन्यथा नहीं। इससे जितना रुद्राक्ष, भस्म, तुलसी, कमलाक्ष, घास, चन्दन आदि को कण्ठ में धारण करना है वह सब जंगली पशुवत् मनुष्य का काम है। जो रुद्राक्ष अर्थात् एक वृक्ष के फल की गुठली और राख (भस्म) धारण करने से मुक्ति मानते हैं, तो राख में लेटनेहारे गदहा आदि पशु और घुंघची आदि के धारण करने वाले भील, कञ्जर आदि मुक्ति को जावें और सुअर, कुत्ते, गधा आदि पशु राख में लेटने वालों की मुक्ति क्यों नहीं होती? जो उत्तम पुरुष हैं, जो अपनी बुद्धि से विचारते हैं, वे कभी इन कपोलकल्पित बातों पर विश्वास नहीं करते और जो अधम पुरुष हैं, जो अपनी बुद्धि से विचार नहीं करते, वो ही इन कपोलकल्पित बातों में विश्वास करते हैं और ऐसी बातों पर विश्वास कर लेते हैं जो असम्भव है। उदाहरण के तौर पर देवी भागवत की कहानी सुनिये—'श्री' नामा एक देवी जो श्रीपुर की स्वामिनी लिखी है, उसी ने सब जगत् को बनाया और ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को भी उसी ने रचा। जब उस देवी की इच्छा हुई तब उसने अपना हाथ घिसा, उससे हाथ में एक छाला, उसमें ब्रह्म की उत्पत्ति हुई। उससे देवी ने कहा कि तू मुझ से विवाह कर। ब्रह्मा ने कहा तू मेरी माता है, मैं तुमसे विवाह कैसे कर सकता हूँ। ऐसा सुनकर माता को क्रोध चढ़ा और लड़के को भस्म कर दिया। फिर हाथ घिसकर उसी प्रकार दूसरा लड़का उत्पन्न किया, उसका नाम विष्णु रखा, उससे भी उसी प्रकार कहा, उसने मना किया तो उसको भी भस्म कर दिया। पुनः उसी प्रकार तीसरे लड़के को उत्पन्न किया। उसका नाम महादेव रखा और उससे कहा कि तू मुझसे विवाह कर। महादेव बोला मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकता। तू दूसरा स्त्री का शरीर धारण कर,

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे?

❑ **कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा**

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं जिन्हें गुरु के रूप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला। वह एक ऐसा मार्गदर्शन था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चाँद एवं नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार तप एवं तपस्या के बल पर वेदरूपी वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है। **'स्त्री शूद्रो नाधीयताम्'** स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया। आर्यसमाज ने न जाने कितने ही अनुसूचित एवं जनजाति युवकों को वेदज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया। आज जगह-जगह वेदमन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है। महर्षि दयानन्द के महान् आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत में एक खलबली मचा दी है। आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बनकर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊँचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हों, पत्थर खाये हों, अपमान के कड़वा घूंट पीये हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो। फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतघ्नता होगी।

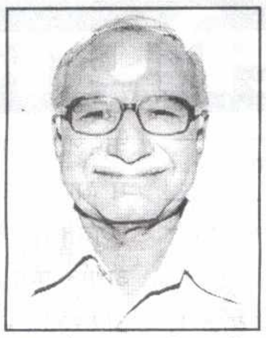

कन्हैयालाल जी आर्य

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज। सभी सोने के रूप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बनकर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? आर्यो! सोचो! विचारो! अपनी अन्तरात्मा में झांको। मैं भी झांकूं, तुम भी झांको, हम सभी झांकें, तभी तो हम ऋषि के ऋण से अनृण हो सकेंगे। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपने नहीं। आइये, आज से हम यह निर्णय लें कि दूसरों के दोष देखने की बजाय अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है, पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बनकर रह गये हैं। परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आपको शान्ति मिलने वाली है। हम भीड़ जुटाने में लगे हैं हर तथा कथित गुरु अपने नाम के बड़े-बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवा कर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है। उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं। बड़े-बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्त सोचो! इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवेकशून्य एवं ज्ञानशून्य है उसे वह तथाकथित गुरु ताली बजवा कर, सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर, ठुमके लगाकर जो असभ्यता का परिचय देकर, धर्म प्रचार का नाम दिया जाता है, क्या यही धर्म है? क्या इसे सत्संग कहोगे? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्राओं को दिखाकर मूर्ख बनाता है उसी प्रकार आजकल यह तथाकथित धर्मगुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वह तो व्यापारी है उन्हें तो व्यापार करना है। परन्तु महर्षि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यो! सोचो! क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकर्मण्यता के कारण नहीं हो रहा है।

जब से हमने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन-सन्ध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है, तभी यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्मगुरु कूड़ा-कर्कट बेच रहे हैं, क्योंकि वह दुकान अपनी ऊँची लगाकर अपना कूड़ा-कर्कट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेदरूपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइये, आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दुःखद पीड़ा यह है कि आज के आर्यसमाजी वेदप्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेदप्रचार का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अतः आर्यसमाजी बन्धुओ! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते हैं, उनके ऋण से अनृण होना चाहते हैं, तो इन दूसरे कर्मों को प्रमुखता देने की बजाय वेदप्रचार को प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि दयानन्द जी को वेदां वाला कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूँ कि विश्व में एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है, जो उच्च स्वर से कहता है कि 'वेद की ज्योति जलती रहे' फिर यह कैसे जलेगी? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी। अतः आर्यो उठो! जागो! और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, झगड़ों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सकें तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

संपर्क-4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, चलभाष-09911197073

बुआ की पुण्यतिथि धूमधाम से मनाई गई

दिनांक 21.8.14 को गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) के प्रांगण में बुआ की पुण्यतिथि धूमधाम से मनाई गई। बुआ के दत्तक पुत्र ब्र० दीपकुमार आर्य, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामस्वरूप शास्त्री थे। ब्रह्मचारियों ने मन्त्र-पाठ किया।

स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास की अध्यक्षता में सभा हुई जिसमें बुआ भरपाई देवी की 18वीं पुण्यतिथि पर चौ० बेगराज आर्य भजनोपदेशक तथा श्री ईश्वर आर्य घिराये की माता जी को श्री श्रद्धांजलि दी गई। बुआ की 18वीं पुण्यतिथि थी।

मंच का संचालन आचार्य रामस्वरूप करते हुए बुआ जी के जीवन के संस्मरण सुनाए। स्नेही जी ने बुआ जी को निडर, यज्ञप्रेमी, ईश्वर-विश्वासी बताया तथा आर्यसमाज के विद्वानों, संन्यासियों को संगठित होने का सुझाव दिया। श्रद्धांजलि देने वालों में श्री रामकुमार आर्य, सत्यवान आर्य, गणेश शास्त्री, धर्मसिंह आर्य, प्रो० चेतन प्रकाश आर्य आदि ने विचार रखे। सत्यप्रकाश मित्तल, पूर्व इंस्पेक्टर निहालसिंह आर्य, सज्जन कुमार एएसआई, निहालसिंह दांगी, श्रीमती अमृतबाला, गरिमा आर्या, सुचेता आर्या, धर्मपाल आर्य उपस्थित थे। बहिन कल्याणी ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे, स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। ब्र० दीपकुमार आर्य ने सबका धन्यवाद किया। ब्र० ने 2100 रु० गुरुकुल आर्यनगर को दान दिया। बच्चों को फल वितरित किये गये। अध्यापक वर्ग ने व्यवस्था में पूर्ण सहयोग दिया।

—आचार्य मानसिंह पाठक,
गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

शोक-समाचार

दिनांक 21.8.14 को प्रातः 4 बजे घिराये गांव के श्री ईश्वरसिंह आर्य की माताजी श्रीमती मैना देवी का 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आचार्य पंडित रामस्वरूप शास्त्री, मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल आर्यनगर के द्वारा अन्त्येष्टि-संस्कार वैदिक रीति से किया। माताजी धर्माचरण महिला थी। वह अपने पीछे साधन सम्पन्न परिवार छोड़ गई। हम वेदप्रचार मण्डल हिसार की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार जनों को अधूरे कार्य को पूर्ण करने की ताकत दे तथा उनकी आत्मा को शक्ति दे। मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने श्रद्धांजलि दी।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही संरक्षक वेदप्रचार मण्डल, हिसार

thearyasamaj.org

योग

-: मन्त्र :-

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम्।
उरुष्य रायऽएषो यजस्व॥ (यजु० 7/4)

अर्थ—हे योग साधक! तू (उपयाम गृहीतो असि) यम-नियमादि के पालन एवं श्रद्धा भक्ति के कारण उचित पात्र के रूप में स्वीकार किया गया है। (अन्तर्यच्छ) आभ्यन्तर प्राण, मन और इन्द्रियाँ हैं उनका नियमन कर (मघवन् सोमं पाहि) हे योगिन् तू योग विद्या से प्राप्त ऐश्वर्य [ऋद्धि-सिद्धि] की रक्षा कर उन्हें किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। (उरुष्य) चित्त को विक्षिप्त करने वाली वृत्तियों [संस्कारों] को नष्ट कर जिससे (रायः) ऋद्धियों एव (इषः) इच्छा सिद्धियों को (आ यजस्व) अच्छे प्रकार प्राप्त हो।

योग के जिज्ञासु पुरुष को चाहिए कि यम-नियम आदि योग अङ्गों से चित्तवृत्तियों को रोक और अविद्यादि पञ्चक्लेशों का निवारण करके संयम से ऋद्धि-सिद्धियों को प्राप्त करे।

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्।
सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व॥ यजुः० 7.5॥

अर्थ—हे (मघवन्) योगी! मैं परमेश्वर (ते अन्तः) तेरे अन्तःकरण में [हृदयाकाश में] (द्यावापृथिवी दधामि) सूर्य एवं पृथिवी के विज्ञान को स्थापित करता हूँ। (सजूः) इन (अवर) पार्थिव विज्ञान (परैः) द्यौलोक सम्बन्धी विज्ञान से युक्त होकर (अन्तर्यामे) अपने मन को वश में रखता हुआ (मादयस्व) आनन्द को प्राप्त हो। ईश्वर का यह उपदेश है कि ब्रह्माण्ड में जितने पदार्थ हैं उनका मुझे ज्ञान है जिसे योगविद्या को न जानने वाला नहीं प्राप्त कर सकता और मेरी उपासना के बिना कोई योगी नहीं हो सकता। क्रमशः अगले अंक में....

क्रमशः अगले अंक में....

(साभार-वेदस्वाध्याय) —आचार्य बलदेव

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 48वां स्थापना दिवस–वार्षिकोत्सव समारोह पर

ऋग्वेदीय बृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

(शुक्रवार दिनांक 26 सितम्बर से बृहस्पतिवार दिनांक 2 अक्तूबर 2014 तक)

सान्निध्य—पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

योग-निर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा-**डॉ. स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती**, पातञ्जल योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार। वेदपाठ-**कन्या गुरुकुल लोवां कलां की छात्राओं द्वारा**। प्रमुख वक्ता-आचार्य राजहंस मैत्रेय आश्रम, **आचार्य सत्यपाल** गुरुकुल फर्रुखनगर, **डॉ. मुमुक्षु जी आर्य** नोएडा, **पं० रामजीवन जी** योगाचाय दिल्ली, **आर्य तपस्वी सुखदेव जी वर्मा (दिल्ली), आचार्य रवि जी शास्त्री** आश्रम, **आचार्य खुशीराम जी** (वेद प्र.आ.प्र.सभा दिल्ली), भजनोपदेशक-**श्रीमती सन्तोष जी आर्या** गन्नौर, **श्री सत्यपाल जी मधुर** पंजाबी बाग, दिल्ली, **पं. रमेशचन्द्र जी आर्य** झज्जर, **श्रीमती रामदुलारी जी** बंसल एवं आश्रम के ब्रह्मचारी।

पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

गुरुवार दिनांक 2 अक्तूबर, 2014 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे
तत्पश्चात् स्थापना दिवस समारोह।

आर्यसमाज के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक
इस शुभ अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-124507, जिला झज्जर, हरयाणा

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी	13-14 सितम्बर 2014
2.	आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (झज्जर)	26 सित० से 2 अक्तू० 2014
3.	आर्यसमाज लोहाणा जिला रेवाड़ी	25-26 अक्तूबर 2014
4.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8-9 नवम्बर 2014
5.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14-16 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

5वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

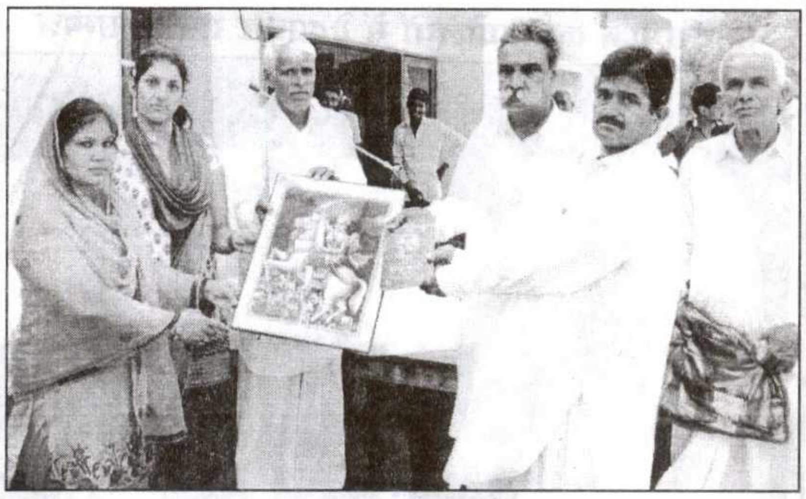

आर्यसमाज मन्दिर सिरसा के तत्वावधान में आर्यसमाज डींग मण्डी का 5वां वार्षिक महोत्सव एक व दो सितम्बर सोमवार व मंगलवार को बड़ी धूमधाम से वृद्धाश्रम में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हवन से हुई।

इस अवसर पर यशवीर आर्य बोदीवाली उपप्रधान कन्या गुरुकुल डोभी हिसार ने भजनों के माध्यम से उपदेश दिया। कार्यक्रम में कल्याणी आर्या आर्य भजनोपदेशिका ने महर्षि दयानन्द जी के ऊपर भजनों के माध्यम से प्रकाश डाला। अंजलि आर्या आर्य भजनोपदेशिका ने समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए आर्यसमाज समाज की मुख्य भूमिका पर भजनों एवं उपदेशों के माध्यम से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर सिरसा के संरक्षक चौ० जगदीश सींवर शेखूपुरिया ने कहा कि एक सप्ताह तक आर्यसमाज का वैदिक प्रचार कल्याणी आर्या भजनोपदेशिका एवं अंजलि आर्या को लेकर व अन्य उपदेशकों को लेकर स्कूल एवं गांव-गांव में प्रचार करेंगे। उन्होंने कहा कि वैदिक प्रचार समय-समय पर होते रहना चाहिए। इससे सामाजिक बुराइयों दहेजप्रथा नारी शिक्षा पर जोर, गोहत्या पर पूर्ण माबन्दी, कन्या भ्रूणहत्या, अश्लीलता आदि को दूर एवं मिटाया जा सके। इस अवसर पर चौ० जगदीश सींवर शेखूपुरिया को ग्रामीणों एवं आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने महारानी लक्ष्मीबाई का चित्र, शॉल एवं सत्यार्थप्रकाश देकर सम्मानित किया।

मंच का संचालन आर्यसमाज सिरसा के धर्माचार्य परमजीत आर्य ने किया। ग्रामीणों एवं आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने धर्माचार्य परमजीत आर्य को शॉल उढ़ाकर सम्मानित किया। परमजीत आर्य ने बताया कि सत्संग से फूलसिंह पटवारी महात्मा भगत फूलसिंह कहलाये, जिन्होंने खानपुर गुरुकुल की स्थापना की, जो अब महिला विश्वविद्यालय बन गया है। सत्संग से एडवोकेट मुंशीराम महात्मा मुंशीराम बनकर स्वामी श्रद्धानन्द बने जिन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र व अन्य अनेक संस्थाएं खोलीं। सत्संग से बैंक मैनेजर महेन्द्रसिंह आर्य महात्मा महेन्द्र सिंह आर्य संस्थापक कन्या गुरुकुल डोभी हिसार बने।

इस अवसर पर आर्यसमाज सिरसा के वेदप्रचार मण्डल के मंत्री चौ० भूपसिंह गहलौत, आर्यसमाज डींग मण्डी के प्रधान धर्मवीर दहिया, उपप्रधान आर्य रवि राड़, यतिन्द्र आर्य बालसमन्द, महावीर आर्य बोदीवाली, बंसीलाल प्रधान आर्यसमाज फतेहाबाद, भूपसिंह पटवारी चाहरवाला आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

—धर्माचार्य परमजीत आर्य,
आर्यसमाज मन्दिर, सिरसा

बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

दिनांक 27 अगस्त 2014 को मदीना (रोहतक) में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी ने यज्ञोपरान्त बालकों में धार्मिक संस्कारों के उदय हेतु अपने विचार रखे। गर्भ तथा बालक की 6 वर्ष की आयु तक लगभग आधे संस्कारों से ही सिद्ध होता है कि यह अवस्था संस्कारों की जनक है। जन्म-जन्म के चित्त में सुप्त पड़े भाव भी उद्भव हो सकते हैं।

श्री प्रदीप जी ने अपने पुत्र आलोक के जन्म दिन पर प्रतिवर्ष यह आयोजन करते हैं। इसी प्रकार का आयोजन 3 सितम्बर को श्री जगमेन्द्र जी ने भऊ आर्यपुर (रोहतक) में भी किया। कार्यक्रम में अनेक भद्रजन उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

वेदों के ज्ञान से भारत विश्वगुरु

आर्यसमाज का विद्यालयों में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

कोटा, 30 अगस्त। वेदों के ज्ञान से ही भारत विश्वगुरु बना था। वेद में विद्यमान दिव्य ज्ञान ही भारत की राष्ट्रीय धरोहर है। वेद मानवमात्र के लिए है इसमें सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के सूत्र निहित हैं। उक्त विचार आर्यसमाज कोटा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति द्वारा विद्यालयों में वेदप्रचार कार्यक्रम के समापन के अवसर पर सर्वोदय पैरामाउण्टेन स्कूल विज्ञाननगर कोटा में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विश्व-बंधुत्व, विश्व-शांति और विश्व-कल्याण के जो तत्त्व वेद में हैं, वे वैश्विक हैं। विदेशी भी वैदिक ज्ञान के कायल हैं। इसमें विद्यार्थियों के लिए भी बहुमूल्य संदेश दिया गया है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती रत्ना जैन महापौर नगर निगम, कोटा ने कहा कि वेदों का स्वाध्याय अपनी जड़ से जुड़ाव है। जैसे जड़ से ही वृक्ष फलता, फैलता है वैसे ही वेदों के पठन से व्यक्तित्व का विकास होता है, वैदिक ज्ञान, विज्ञान पर आधारित है इसे आज के वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्रीमती सरिता रंजन गौतम प्राचार्या डीएवी स्कूल कोटा ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नारी को समानता का अधिकार दिलाया। उन्होंने पुरुषों के समान महिलाओं को भी वेद पढ़ने का अधिकार दिया। इसी कारण आज महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है। आज पुरुषों के समान महिलाएं भी महत्त्वपूर्ण पद पर विराजमान है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा प्रधान आर्यसमाज जिला सभा कोटा ने कहा कि महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह अनुभव किया कि लोग वैदिक ज्ञान को भूलते जा रहे हैं इसलिए उन्होंने **'वेदों की ओर लौटो'** का नारा दिया। इसी प्रकार युवापीढ़ी को वेदों से जोड़ने का हमारा संकल्प है। सर्वोदय ग्रुप ऑफ एजुकेशन के चेयरमेन ए.जी. मिर्जा ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि देश में रहने वाला हर व्यक्ति भारतीय है और हमें भारत से जुड़ी प्रत्येक मान्यता का ज्ञान होना चाहिए। जब हम एक दूसरे को जानेंगे तभी हमारा सही विकास होगा। इसलिए हमें वेदों का स्वाध्याय जरूर करना चाहिए।

स्वागत की इस शृंखला में आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा मंच पर विराजमान श्रीमती रत्ना जैन महापौर कोटा, श्रीमती सरिता रंजन गौतम प्राचार्या डीएवी स्कूल कोटा, श्रीमती ए.जी. मिर्जा चेयरमेन सर्वोदय ग्रुप, डा. अजहर मिर्जा डायरेक्टर सर्वोदय ग्रुप, प्राचार्या कुसुम विजयवर्गीय सर्वोदय स्कूल तथा मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री का ओइम का पटका तथा शॉल ओढ़ाकर एवं केसरिया पगड़ी पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर अतिथियों को स्मृति चिन्ह व सत्यार्थ प्रकाश देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर वेद प्रचार समिति कोटा तथा सर्वोदय ग्रुप ऑफ एजुकेशन कोटा की ओर से कार्यक्रम में उपस्थित आर्यसमाज के प्रधान, मंत्री एवं पदाधिकारियों का ओ३म् का दुपट्टा तथा शॉल ओढ़ाकर राजस्थानी साफा से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में वेदप्रचार समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक एवं डॉ. के.एल. दिवाकर ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदप्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने समिति द्वारा वेद प्रचार के लिए किये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम में आर्यसमाज विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस. दुबे, विद्वान् डा. के.एल. दिवाकर, आर्यसमाज तलवंडी के मंत्री भैरूलाल शर्मा, विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, श्रीचंद गुप्ता, लालचंद आर्य, पुरोहित क्षेत्रपाल, आर्य समाज रामपुरा के चन्द्रमोहन कुशवाह, आर्य समाज तिलक नगर छावनी के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, मंत्री नरेन्द्र विजयवर्गीय, आर्यसमाज रेलवे कॉलोनी के मंत्री कर्णसिंह, रामचरण आर्य, आर्यसमाज भीमगंज मण्डी प्रधान सूरजमल त्यागी, मंत्री धीरेन्द्र गुप्ता, अजय सूद, बी.आर. त्यागी, उदय प्रकाश अस्थाना, गायत्री विहार के विनय मेहता, डी.ए.वी. कोटा के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य तथा सर्वोदय विद्यालय कोटा के अध्यापक, अध्यापिकाएं तथा बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सम्मानित अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ किया। अंत में सर्वोदय स्कूल की प्राचार्या श्रीमती कुसुम विजयवर्गीय ने आगन्तुक अतिथियों का आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

–अरविंद पाण्डेय, अध्यक्ष महर्षि दयानन्द, वेद प्रचार समिति, मो. 9799498477

भजन तर्ज-देशी हरियाणवी

सुनहरा सिंह नरवाल

टेक-घणे आलिए आड़े-घणे जालिए वैं खालिए आण-काल न रै।
पैदा सो नपैद प्राणी न्यूए बाजै ना तान-टाल में रै॥

1. चौरासी लाख योनी में जीव रहता जंग झोण में रै।
न्यूए आवै न्यूए चाला जा पावण और खोण में रै।
भूल-भुलइया-भक्ति बिन लागै टेम टोहण में रै।
परछाई भी पावै ना वा टलज्या गेल होण में रै।
मौत कदे ना रुकै रोण में रै दया करै ना किसे ढाल में रै।
पैदा सो नपैद प्राणी.. ॥

2. जन्म-जश्न में मृत्यु से मातम न्यूए खुशी कदे गमी सै रै।
आवागमन कुदरती लगरी बुद्धि किते कमी सै रै।
जीयाजुन की टक्कर बाजै धक ओटै खूब जमी सै रै।
यूहे चक्कर चलै सदा से चस-बुझ लौ यमी सै रै।
केरा कुण-कुण होगे भूमि पै रै गए फँस कै वै भ्रमजाल में रै।
पैदा सो नपैद प्राणी.. ॥

3. ब्रह्माण्ड भी रचना-प्रलय की खेजा हेम-खेम न रै।
बन्धन बन्धरे एक-दूजे के पूरे हेज-प्रेम में रै।
नाशवान सब चीज बिछड्ज्या तोड़कै तूर्त फ्रेम न रै।
बणा-बणाया खेल बिगड़ज्या पड़ज्या विघ्न गेम में रै।
होणी उक्कै नहीं टेम न रै वा तकले-तत्काल में रै।
पैदा सो नपैद प्राणी.. ॥

4. **सुनहरा सिंह नरवाल** फंसी में पड़ज्या सारी सहणी रै।
वक्त सधै जब आपै थमज्यां ये दरिया-नदिया बहणी रै।
या दुनियादारी के दिखै सै या भी सदा ना रहणी रै।
काल कै टाल कदे ना होती याहे सब की कहणी रै।
सच्चाई पर्ख कै चाहिए लहणी रै करकै गौर ख्याल में रै।
पैदा सो नपैद प्राणी.. ॥

—सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा पुलिस, नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक। मो० 09416357176

शोक-समाचार

आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी महानन्द जी का दिनांक 4 सितम्बर 2014 को प्रातः 7.45 बजे गुरुकुल कालवा जिला जीन्द में 94 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। स्वामी जी गत कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से गुरुकुल कालवा में किया गया। वैदिक संस्कार में डेढ़ क्विंटल गाय का घी व इतनी ही सामग्री से संस्कार में आहुति डाली गई।

स्वामी जी ने हिन्दी सत्याग्रह व गोरक्षा आन्दोलन में भी भाग लिया। वे आर्यसमाज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। उन्होंने गुरुकुल झज्जर व गुरुकुल कालवा, गोशाला धड़ौली तथा आर्यसमाज कासण्डी को भी बहुत सहयोग दिया। उनके निधन से आर्यसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

इनके संस्कार में लगभग एक दर्जन वैदिक विद्वान् व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे जिनमें प्रमुख आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सभामन्त्री मा० रामपाल आर्य, आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा, स्वामी धर्मदेव जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी, आचार्य योगेन्द्र जी, प्रधान हरियाणा गोशाला संघ, मंत्री सर्वमित्र आर्य, आचार्य ऋषिपाल जी, आचार्य आत्मप्रकाश जी, स्वामी सोमानन्द जी, पूर्व सभामंत्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री, श्री चन्द्रदेव जी, यज्ञमुनि जी, श्री वीरेन्द्रसिंह, श्री चतरसिंह सिवाह आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे।

—आचार्य बलदेव जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

दर्शन-दिग्दर्शन

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है, इसीलिए इसको मनुष्य, मानव, मनुज कहते हैं। जिन का अर्थ है—सोचने वाला, समझने में सक्षम। इन शब्दों की मूल धातु है—मन, जो कि अवबोधन=ज्ञान, समझ के मूलबिन्दु को प्रकट करती है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा यही मानव की उत्कृष्टता का एक आधार है। इसी के आधार पर मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है। आंख खुलते ही मानव शिशु अपने चारों ओर की वस्तुओं का घूर-घूर कर अपनी आंखों से देखता है। बोलना सीखते ही अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए प्रश्नों की झड़ी लगा देता है। वह अपने चारों ओर विद्यमान वस्तुओं को जानने और यथासमय अपने मन में उभरने वाली आशंकाओं की निवृत्ति के लिए सदा ही प्रयत्नशील रहता है।

मनुष्य जैसे-जैसे शारीरिक तथा मानसिक प्रगति करता है, तब अपनी योग्यता, शिक्षा, रुचि के अनुरूप कुछ न कुछ सोचता है। जाग्रत अवस्था का ऐसा कोई विरला ही समय होता है, जब कोई किसी सोच एवं चाहना से शून्य हो। सामान्य स्थिति में जहां अन्य अनेक तरह के विचार उभरते हैं, वहां कभी-कभी मन में नानाविध गंभीर विचार भी उठते हैं। इन उभरने वाली जिज्ञासाओं में जहां संसारी बातें होती हैं, तो वहां कभी जीवन और जगत् से जुड़ी जिज्ञासायें भी होती हैं, क्योंकि मानव की यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह आंख मूंदकर किसी बात को नहीं मानना चाहता। बिना समझे किसी परिणाम पर पहुंचना नहीं चाहता। मनुष्य की मननशीलता, वैज्ञानिक प्रवृत्ति की यह एक स्वाभाविक मांग है।

जब एक व्यक्ति सांसारिक चिन्ताओं से दूर होकर एकान्त-शान्त स्थिति में होता है तो वह अपने चारों ओर फैले हुए इस जगत् तथा अपने सम्बन्ध में सोचता है। गहराई से सोचते-सोचते उसके सामने अनेक प्रश्न पैदा होते हैं, जैसे कि इस संसार का स्वरूप क्या है? यह कब, कैसे, क्यों बना? इसके मूल तत्त्व क्या हैं? यह अपने आप बना है या इसको किसी ने बनाया है? यदि इसका कोई बनाने वाला है तो उस कर्त्ता का स्वरूप क्या है? वह इसको कैसे बनाता है और उसने इसको कब, क्यों बनाया? तथा यह सब किस के लिए है?

संसार से जुड़े प्रश्नों के साथ अपने सम्बन्ध में भी जिज्ञासा उभरती है कि मैं कौन हूँ? इस अपार संसार में इस रूप में कैसे, क्यों आया हूँ? यहाँ अपनी इच्छा से आया हूँ या परवश होकर? यहाँ आने का मेरा उद्देश्य क्या है? मैं सर्वत्र स्वतन्त्र हूँ या परतन्त्र हूँ? यह जीवन, सुख, दुःख क्या है? यह और संसार सार रूप हैं या असार हैं? इस संसार, इसके कर्त्ता और मेरा परस्पर क्या सम्बन्ध है? इस प्रकार के प्रश्नों के चिन्तन, मनन, विवेचन का नाम ही दर्शन है। संसार में प्रत्येक काल के मनीषी के मन में ऐसे प्रश्न उभरते रहे हैं और उन्होंने अपनी-अपनी योग्यता, रुचि, सुविधा के अनुरूप इन प्रश्नों का उत्तर खोजने का हर सम्भव प्रयास किया।

शब्दार्थ-दर्शन शब्द सामान्य रूप से देखने के अर्थ में प्रसिद्ध है। वैसे देखने के साधन के अर्थ में जहां मिलता है, वहाँ कभी-कभी विचार, सिद्धान्त अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। हिन्दी भाषा के कोशों में दर्शन शब्द-चाक्षुषप्रत्यक्ष, साक्षात्कार, विशेषशास्त्र, नेत्रदृष्टि, बुद्धि, स्वप्न, दर्पण, धर्म, यज्ञ आदि अर्थों में आया है। हाँ, दर्शन शब्द दृशिर् (प्रेक्षणे) धातु से ल्युट्-अन प्रत्यय के होने पर बनता है। प्र+ईक्षण=अच्छी तरह से, गहराई से देखने का भाव जहाँ प्राथमिक स्थिति में सामने आता है, वहाँ 'गहरे पानी पैठ' के अनुरूप सोच-विचार की अन्तिम स्थिति तक का सारा विषय इसके अन्तर्गत आ जाता है।

क्रमशः अगले अंक में....

—भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,
B-2, 92/7B, शालीमार नगर,
जिला होशियारपुर (पंजाब)

शिक्षक दिवस

5 सितम्बर को पूरे देश में शिक्षक दिवस को गुरु उत्सव के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश के सभी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

भारत देश को विश्व का गुरु कहा जाता है। इस देश में एक से बढ़कर एक महान् गुरु हुए और उन्होंने महान् शिक्षा दिये। गुरुजनों का सम्मान करने से ही जीवन में सफलता मिलती है। जन्म लेने के बाद पहला गुरु उसकी माता, दूसरा पिता और तीसरा गुरु आचार्य होता है। गुरु का दर्जा सदैव ऊंचा होता है। जैसे गुरु वशिष्ठ ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को, श्री ऋषि संदीपन ने श्रीकृष्ण को, द्रोणाचार्य ने अर्जुन को चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को, प्लेटो ने अरस्तु जैसे महान् शिष्य इस दुनिया को दिये। इन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। गुरु विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द जैसे शिष्य तैयार किये जिन्होंने अपना सारा जीवन समाज-सुधार गोरक्षा, पाखंड से बचने के लिए जागृति एवं नारी शिक्षा आदि पर लगाया। स्वामी जी की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जैसे बलिदानी जिन्होंने देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए अपना बलिदान दिया। आचार्य बलदेव जी ने अनेक शिष्य दुनिया को दिये। खेलों में भी अनेक गुरुओं ने अपने खिलाड़ी शिष्य दिये जिन पर पूरा भारत गर्व करता है। मेहनत व लगन से कार्य करने वाले शिक्षक का सम्मान आगे भी होता रहेगा।

अतः हम सब गुरु और शिष्य के इस पवित्र रिश्ते को हमेशा आगे बढ़ाना चाहिए।

—जगदीश चहल, डी.पी.ई.

अमावस व जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

दिनांक 25.8.14 को अमावस व सेठ सज्जनकुमार मित्तल के सुपुत्र श्री निखिल के 20वें जन्मदिवस पर सैक्टर-14, हिसार में वेदप्रचार मण्डल द्वारा यज्ञ किया गया। यज्ञ पंडित भरतलाल शास्त्री हांसी द्वारा किया गया। पंडित जी आदर्श गृहस्थ जीवन पर सारगर्भित प्रवचन दिया तथा बच्चे को शुभाशीर्वाद दिया। मंडल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने आत्मा-परमात्मा पर विचार रखे तथा नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने लोगों को आर्यसमाज से जुड़ने पर जोर दिया तथा पाखण्ड व अन्धविश्वास से दूर रहने का सुझाव दिया।

—वेदप्रकाश आर्य, हिसार

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज नलवा जिला हिसार के मंत्री श्री नरेन्द्र आर्य की दो सुपुत्री (जोड़ली) का 31.8.14 को दो वर्ष पूर्ण होने पर उनके जन्मदिवस पर वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा उनके मकान पर यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने संस्कार विधि पर विस्तार से प्रकाश डाला। यज्ञ के लाभ भी बताए तथा पोतियों को आशीर्वाद दिया। बच्चियों का नाम सिमरण, स्नेहा है।

इस अवसर पर आशीर्वाद देने वालों में श्रीमती सुनेहरी आर्या, बिमला आर्या, श्रीमती सरला आर्या, सरोज आर्या, भलेराम आर्य, मनोज आर्य आदि उपस्थित थे। देशी घी के हलवे का प्रसाद बांटा गया।

—पवन कुमार आर्य नलवा (हिसार)

महाशय मामचन्द आर्य का निधन

महाशय मामचन्द आर्य, दयानन्दमठ रोहतक का आकस्मिक निधन दिनांक 7 सितम्बर 2014 को दोपहर 12 बजे हो गया। उनका दाह-संस्कार सायं 5 बजे पूर्णतया वैदिक रीति से ब्र० अरुण कुमार व श्री आजाद मुनि हिसार द्वारा किया गया। दाह-संस्कार पर सभामन्त्री मा० रामपाल आर्य, श्री रणवीर बल्हारा, श्री कर्णसिंह मोर, श्री हवासिंह राठी, श्री शेरसिंह कटारिया, श्री सुखबीर शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, महामंत्री आर्यवीर दल रोहतक, श्री महावीर शास्त्री, श्री विजय कुमार सैनी, प्रधान सैनी एजुकेशन सोसायटी रोहतक, श्री कंवल सिंह सैनी, मा० मेघराज आर्य, श्री चन्द्रभान सैनी, श्री सुखवीर दहिया, श्री दयानन्द आर्य, गुरुकुल लाढौत के संस्थापक आचार्य हरिदत्त, श्री विक्रम शास्त्री, विनोद आर्य व विजय आर्य आचार्य प्रेस रोहतक, म० दयाकिशन आर्य, श्री बालकिशन सैनी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति तथा परिवार के सदस्य उपस्थित थे। वे 98 वर्ष के थे। वे अपने पीछे पूरा भरा परिवार छोड़ गये हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक आन्दोलन में उनका पूरा सहयोग रहता था। उनको केवल अक्षरज्ञान होने के उपरान्त भी सत्यार्थप्रकाश तथा अनेक वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करते रहते थे। वे सादगी के प्रतीक थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा व्यथित परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देवे।

उनकी शोक सभा दिनांक 21.9.2014 को शिव धर्मशाला गोहाना रोड निकट दयानन्दमठ रोहतक में दोपहर बाद 3 से 4 बजे तक होगी।

—सत्यवान आर्य, स०कार्यालयाधीक्षक

ज्ञान का महासागर है शिक्षक : डॉ. देवव्रत आचार्य

शिक्षक दिवस पर एसबीआई के मुख्य प्रबंधक ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र को भेंट किए दो कम्प्यूटर

कुरुक्षेत्र 05 सितम्बर, 2014 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने कहा कि शिक्षक ज्ञान का महासागर है। वह अपने ज्ञान, विवेक व बुद्धि से शिष्य की अन्तरात्मा को शुद्ध करता है। हर विद्यार्थी के हृदय में ऊर्जा का स्रोत होता है, जिसे शिक्षक ही सही सदुपयोग का तरीका सिखाते हैं। यदि विद्यार्थी को सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो वह उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाता है। वह शुक्रवार को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शिक्षक दिवस पर आयोजित समारोह में बोल रहे थे, जबकि स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के प्रशासनिक शाखा के मुख्य प्रबंधक प्रदीप कुमार कौशल व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एसबीआई शाखा के मुख्य प्रबंधक किसल्य कुमार व उप-प्रबंधक गुलशन ग्रोवर मुख्य अतिथि व अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। प्राचार्य ने कहा कि शिक्षक न केवल अपने शिष्य को पंख प्रदान करता है, बल्कि उसे उड़ने के लिए आसमान भी दिखाता है। शिष्य अपने शिक्षक की शिक्षाओं को पूरी तरह से खुद के जीवन में उतार कर कामयाबी की इबारत लिखता है। शिक्षक का ऋण हम किसी भी रूप में उतार नही सकते, क्योंकि जिस समाज में हमने रहना है, उसके लिए योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। समाज के लिए शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्त्व यहीं समाप्त नहीं होता। इसी कारण शिक्षकों को भगवान के समान दर्जा दिया जाता है, क्योंकि वे शिष्य को तराश कर हीरा बनाते हैं, जिससे शिष्य मुश्किलों से जूझना सीखते हैं। गुरु और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध है। शिक्षक एक घने वृक्ष की तरह अपने शिष्य को हर तरह से छाया प्रदान करता है। चाहे वह एक पिता की भूमिका हो, एक शिक्षक की या फिर एक पथ-प्रदर्शक की। उन्होंने कहा कि शिक्षा वही है, जो सच्चरित्र, सदाचार, परोपकार, कल्याण-भावना, विवेक आदि संस्कारों को प्रचारित व प्रसारित कर मनुष्य का वैचारिक स्तर ऊँचा उठाती है। उन्होंने अपने वक्तव्य को कविता शैली में समाप्त करते हुए कहा कि—

माँ और बाप की मूरत है शिक्षक।
कलयुग में भगवान की सूरत है शिक्षक॥

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रशासनिक शाखा के मुख्य प्रबंधक प्रदीप कुमार कौशल ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र को बैंक की ओर से दो कम्प्यूटर भेंट किए। गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व उपप्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान ने बैंक अधिकारियों का कम्प्यूटर भेंट करने पर आभार व्यक्त किया।

चौ० विजय कुमार पूर्व उपायुक्त को याद किया गया

आर्य निवास नलवा (हिसार) में 27.8.14 को स्व० चौ० विजय कुमार पूर्व उपायुक्त के 19वीं पुण्यतिथि पर हवन किया गया तथा श्रद्धांजलि दी गई।

इस अवसर पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने उनके जीवन व कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि चौ० साहब दृढ़ ईश्वर विश्वासी, ईमानदार, कर्मठ तथा शराबबन्दी आन्दोलन के योद्धा थे। यज्ञ पर भलेराम आर्य, राजवीर आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, श्रीमती सरोज आर्या, बेटी उर्मिल, श्रीमती बिमला देवी, पवन कुमार आर्य आदि उपस्थित थे। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद बांटा गया।

—नरेन्द्र आर्य, मंत्री आर्यसमाज नलवा, हिसार

एनसीसी कैडेट्स ने पौधरोपण कर दिया पर्यावरण स्वच्छ रखने का संदेश

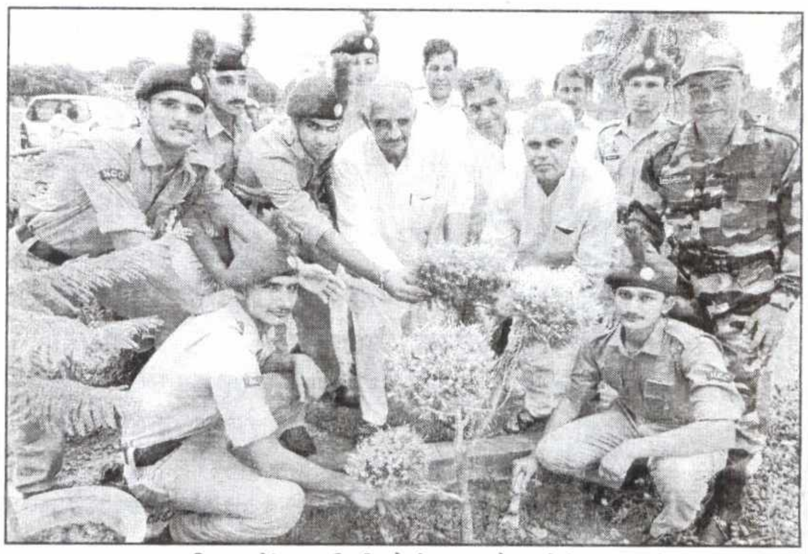

गुरुकुल परिसर में एनसीसी कैडेट्स पौध रोपित करते हुए।

कुरुक्षेत्र 9 सितम्बर, 2014 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एनसीसी कैडेट्स ने मंगलवार को गुरुकुल परिसर में नीम, शीशम, पीपल, आम इत्यादि की पौध रोपित कर पौधरोपण अभियान चलाया, जिसका शुभारंभ गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने नीम का पौध रोपित कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कैडेट्स को पौधरोपण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि प्रत्येक मानव अपने जीवन में एक पौध रोपित करने का संकल्प ले तो यह भूमि न केवल हरी-भरी होगी बल्कि पर्यावरण भी स्वच्छ व शुद्ध होगा। इसलिए हमें पौधरोपण के पश्चात् उसे सिंचित कर उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व भी निभाना चाहिए ताकि वह पौधा हमें जीवन भर ऑक्सीजन प्रदान कर सके। उन्होंने कहा कि एक मित्र जीवन में साथ छोड़ सकता है, परंतु वृक्ष हमारा जीवन भर साथ निभाते हुए हमें शुद्ध प्राण वायु प्रदान करते हैं। उन्होंने कैडेट्स को आह्वान किया कि वे अपने जीवन में पौधे रोपित करने का संकल्प लें, ताकि प्रदूषण से मुक्ति मिल सके।

एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट श्रवण कुमार भारद्वाज ने एनसीसी कैडेट्स को वृक्षों की जीवन में उपयोगिता बताते हुए कहा कि पौधरोपण से ही भूमि पर जीवन संभव है, क्योंकि वृक्षों से ही ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। वृक्ष ही भूमि के श्रृंगार हैं। वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोककर भू-संरक्षण में अहम भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं। इस अभियान में गुरुकुल के 50 एसडी और 48 जेडी कैडेट्स ने श्रमदान कर वृक्षरोपण में अहम् योगदान दिया। कैडेट्स ने विभिन्न प्रकार के लगभग 500 पौधे रोपित कर पर्यावरण स्वच्छ रखने का पैगाम दिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री मास्टर रामपाल आर्य, गुरुकुल के उप-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान व गुरुकुल के प्रेस प्रवक्ता डॉ. श्यामलाल शर्मा के अतिरिक्त अनेक आचार्यगण उपस्थित थे।

ग्रीष्मकालीन वेदप्रचार अभियान सम्पन्न

वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन हरयाणा के तत्त्वावधान में आर्यजगत् के वैदिक मनीषी युवा ओजस्वी वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री हांसी हरयाणा द्वारा ग्रीष्मावकाश जून-2014 का वेदप्रचार अभियान उत्तर-प्रदेश के बुन्देलखंड क्षेत्र कानपुर-हाँसी-हमीरपुर-बाँदा-फतेहपुर एवं जालौन जिलों के सैकड़ों गाँवों में जा-जाकर सर्वथा निःशुल्क जहाँ विद्वानों ने मार्गव्यय भी नहीं लिया, वेदप्रचार किया। निर्धन, गरीब किसानों, मजदूरों के बीच जाकर वैदिक धर्म-आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के बारे में समझाने का प्रयास किया गया। आचार्य जी द्वारा वैदिक साहित्य भी वितरित किया गया। वेदप्रचार में विशेष सहयोगी रहे राहुल आर्य ने बताया कि आचार्य रामसुफल शास्त्री के नेतृत्व में सफलता पूर्वक किए गए वेदप्रचार अभियान में उनके साथ पं० नरेन्द्र देव शास्त्री चंडीगढ़, सुश्री वन्दना शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय दाधिया अलवर (राजस्थान), बिमलेश शास्त्री बल्टाना (पंजाब), पं० शिवशंकर आर्य हमीरपुर (उ०प्र०) एवं पं० चन्द्रकान्त शास्त्री हाँसी (हरयाणा) ने अपना-अपना अमूल्य योगदान दिया। आचार्य रामसुफल शास्त्री जी ऐसा प्रयास समय-समय पर करते ही रहते हैं। आचार्य रामसुफल शास्त्री वेदप्रचार के साथ-साथ निर्धन-गरीब व अनाथ बच्चों को पढ़ा-लिखाकर विद्वान् बनकर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं।

—डॉ. सुदामा शास्त्री महामंत्री

thearyasamaj.org

आर्य-संसार

सुप्रसिद्ध शायर स्व० 'नाज़' सोनीपती स्मृतिपर्व

हिन्दी, उर्दू, मुलतानी (सिरायकी) भाषाओं में बड़ी महारत से धार्मिक, सामाजिक, प्रेरणादायी कविताएं और शायरी करने वाले सुप्रसिद्ध आर्य कवि आर्यसमाज के पूर्व प्रधान स्व० श्री हरीशचन्द्र 'नाज़' सोनीपती जी की 86वीं जयन्ती के अवसर पर आर्यसमाज 'शहर' बड़ा बाजार सोनीपत के तत्त्वावधान में स्मृतिपर्व आयोजित किया गया। इस अवसर पर हरयाणा उर्दू अकादमी द्वारा 'फख्रे हरयाणा' सम्मान हेतु चयनित उर्दू, हिन्दी सिरायकी के प्रख्यात कवि डॉ. राणा गन्नौरी जी, आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य हरिप्रसाद जी, पं. रामचन्द्र आर्य, अरबी संगम सोनीपत के पूर्व सचिव श्री देशराज 'कैफ', मशहूर कविगण यथा-देवराज पुरी 'दिलबर', शान्ति स्वरूप 'सरशार', हरभगवान रहेजा, दयालचंद नारंग, आर्यसमाज सैक्टर-14 के प्रधान श्री ईश्वर दयाल शर्मा, आर्यसमाज शान्ति नगर (चार मरला) सोनीपत के प्रधान श्री हरिश्चन्द्र 'स्नेही' जी आदि वक्ताओं द्वारा स्व० नाज़ सोनीपती जी के जीवन संस्मरण प्रस्तुत किये गये। स्व० नाज़ जी द्वारा शिक्षा, देश, धर्म, आर्यजाति के प्रति अर्पित की गई सेवाओं के लिये उन्हें याद किया गया। उपस्थित विद्वज्जनों द्वारा प्रवचनों के माध्यम से अपने पूर्वजों के गुणों, सुचरितों का अनुसरण करते हुए उनके परिश्रम को व्यर्थ न करने की प्रेरणा दी गई।

आर्यसमाज के शताब्दी वर्ष 2016 के उपलक्ष्य में आरम्भ की गई ग्रन्थमाला प्रकाशित करने की योजना के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी द्वारा लिखित पुस्तक 'धर्म तर्क की कसौटी पर' का विमोचन भी किया गया। स्व० नाज़ सोनीपती जी की धर्मपत्नी माता रुक्मिणी देवी जी का सम्मान भी किया गया।

—प्रवीण आर्य मंत्री,
9992768483

सत्य ही स्वर्ग का सोपान है.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

वैसा ही देवी ने किया, तब महादेव बोला यह दो ठिकाने राख-सी क्या पड़ी हैं? देवी ने कहा कि ये दोनों तेरे भाई हैं। इन्होंने मेरी आज्ञा न मानी, इसलिए भस्म कर दिये। महादेव ने कहा मैं अकेला क्या करूंगा? इनको भी जिला दे और दो स्त्री और उत्पन्न कर। तीनों का विवाह तीनों से होगा। ऐसा ही देवी ने किया, फिर तीनों का तीनों के साथ विवाह हुआ। वाह रे! माता से विवाह न किया और बहन से कर लिया। क्या इसको बुद्धिमान् उचित मानेंगे? केवल बुद्धिहीन जिनको अधम कहा गया है, वही मान सकते हैं, अन्य कोई नहीं मानेगा।

जरा सोचो—महर्षि दयानन्द सरस्वती का क्या दोष था? जो उन्हें लोगों ने कितनी बार जहर दिया, उनको मारने के लिए ईंट-पत्थर फेंके और गाली-गलौच किया, इतना ही नहीं जहरीले सर्प तक उनके ऊपर फेंके। दोष इतना कि वह सत्य का उपदेश करते थे, असत्य को छुड़ाना चाहते थे। उपरोक्त प्रकार की काल्पनिक कथा, कहानियों के सहारे चला रहे रोटी-रोजी वालों का भाण्डाफोड़ करते थे। अरे बुद्धि से तो विचारों कहीं ईंट-पत्थरों की काल्पनिक मूर्तियां भी कभी भगवान हो सकती हैं? ईश्वर का स्थान कोई अन्य ले सकता है, क्या किसी में ईश्वर के सिवाय सृष्टि रचना का सामर्थ्य है। केवल ईश्वर में जगत् रचना का सामर्थ्य है। उसके तुल्य न कोई था, न है और न भविष्य में होगा।

पुरुषोत्तम श्रीराम और महायोगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज को जो ईश्वर का अवतार बताकर उनकी काल्पनिक प्रतिमा बना पुजवा रहे हैं और उसके पीछे अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं, वे तो नरक में जायेंगे ही, उनको भी नरक में झोंक रहे हैं जो अन्धविश्वासी मूर्तिपूजा में लगे हैं। ऐसे लोगों को मनुष्य योनि न मिलकर पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि की योनियां प्राप्त होती हैं। यदि सुख पाना है तो असत्य को छोड़, ईश्वर के सत्य स्वरूप, गुण-कर्म-स्वभाव को जानकर उपासना करें। उसके अतिरिक्त अन्य कोई पूजा के योग्य नहीं है। जो ईश्वर के स्थान पर अन्य की पूजा करता है, वह सत्य से हमेशा परे रहता है और सत्य के बिना धारण किये कोई सुख नहीं पा सकता। यह कटु सत्य है और महर्षि दयानन्द की भी यही मान्यता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य जानना है तो वेद अवश्य पढ़ें।

हाँसी में गरीब कन्या का विवाह सम्पन्न

वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन (रजि०) शास्त्री भवन लाल सड़क हाँसी द्वारा एक जरूरतमंद गरीब कन्या का विवाह 8 अगस्त 2014 को आचार्य रामसुफल शास्त्री के नेतृत्व में कराया गया। वन्दना सिलाई सेंटर की छात्राओं द्वारा वर-वधू को मनपसंद उपहार प्रदान किये गये।

इस अवसर पर वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन के उपप्रधान मा. रामअवतार सिंह, संरक्षक रामकुमार लाम्बा, कोषाध्यक्ष राकेश ठाकुर, डॉ. राकेश कुमार, सिलाई सेंटर की संचालिका सावित्री देवी, इंचार्ज वन्दना शास्त्री के अलावा सरदार कृष्ण एलावादी, भाजपा नेता मामनराम सैनी, राजेश ठकराल, आर्य स्कूल से डी.डी. शर्मा, इनेलो नेता विजय जैन, पं. नरेन्द्र देव शास्त्री, डॉ. जगन्नाथ कालड़ा, रामसिंह आर्य, राकेश ठाकुर, सतबीर सैनी, मित्रदेव नारंग, सुमित मखीजा, रमेश जैन, शाहिल कामरा, चन्द्रकान्त शास्त्री, शान्ति देवी, आशा भूटानी, गगन थापा, पार्वती थापा आदि अनेक नर-नारी उपस्थित थे।

—सावित्री देवी, सचिव

वेदप्रचार का आयोजन

दिनांक 22.8.2014 को शाहपुर रोड पर श्री रामकुंवार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल की बीज फैक्ट्री (शक्तिवर्धक) में प्रातः 9 बजे यज्ञ आचार्य रामस्वरूप शास्त्री द्वारा किया गया। उनके पुत्र श्री वेदप्रकाश आर्य दम्पति ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। ब्रह्मचारी दिपांशु ने ईश्वरभक्ति का भजन सुनाया। आचार्य जी यज्ञ के लाभ बताते हुए पुरुषार्थ को भाग्य से बड़ा बताया। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने चरित्र निर्माण पर अपने विचार रखे। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य प्रमोद योगार्थी ने महर्षि दयानन्द के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए यज्ञ को सर्वोत्तम कार्य बताया। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने उपस्थित लोगों को कहा कि अपना आत्मनिरीक्षण करके प्रत्येक बुराई को छोड़ना चाहिये।

—सत्यप्रकाश मित्तल, कोषाध्यक्ष

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज भवन सुन्दरनगर (फतेहाबाद) में दिनांक 24.8.14 को यज्ञ व वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पुरोहित राजन शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। तीन जोड़ों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। जगदीश सींवर सिरसा की अध्यक्षता में कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। आर्यसमाज के मंत्री डॉ. राजवीर आर्य ने मंच का संचालन करते हुए आर्यसमाज के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प दिलवाया। इस अवसर पर मनोज ढाका समाजसेवी ने गोरक्षा पर बल दिया। बिश्नोई मन्दिर के पुरोहित ने मूर्तिपूजा का विरोध किया। बहन कल्याणी के शिक्षाप्रद भजन हुए। आचार्य डॉ० प्रमोद ने वैदिक शिक्षा का महत्त्व पर प्रकाश डाला। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने कहा कि आर्यसमाज के विद्वानों को संगठित होकर शराबबन्दी आन्दोलन चलाना चाहिए जिससे कि युवापीढ़ी का चरित्र निर्माण हो सके। सभा के भवन में नर-नारियों की भीड़ रिकार्डतोड़ थी। मंच पर श्री हरिसिंह भूषण, डॉ० चिरंजीलाल, कोषाध्यक्ष देशराज भाटिया, सीमा ग्रोवर, श्रीमती सन्तोष भ्याणा आदि उपस्थित थे।

—बंसीलाल आर्य, प्रधान

गांव कंवारी (हिसार) में दशोटन एवं जलवा पूजन

दिनांक 2.9.2014 को वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही के सगे भतीजे प्रद्युम्न जोशीला सुपुत्र हरपालसिंह दुहन के सुपुत्र चि० अभिमन्यु के जन्म दिवस पर प्रद्युम्न जोशीला वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक गाव कंवारी ने अपने घर पर दशोटन एवं जलवा पूजन का आयोजन किया। इस अवसर पर गांव-गुहांड, रिश्तेदार तथा मित्रगणों ने सैकड़ों की संख्या में परिवार सहित प्रीतिभोज में भाग लिया। पूर्व सरपंच श्री धूपसिंह दुहन ने सबका धन्यवाद किया। सभी पधारने वालों व बच्चों को आशीर्वाद दिया। परमपिता परमात्मा से लम्बी आयु तथा अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

—नवीन आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज कंवारी (हिसार)

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

गरीबी की रेखा से नीचे है भारत में लगभग एक तिहाई आबादी

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

आजादी के 66 वर्ष बाद भी अगर देश में लगभग एक तिहाई आबादी गरीबी की रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने को मजबूर है तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों के स्वप्न अधूरे रह गए हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह अरमान था कि देश के आजाद होने के बाद ऐसी आर्थिक नीतियां बनेंगी जिसका लाभ सर्वहारा वर्ग को होगा। लेकिन आज ऐसा हुआ नहीं। अमीर अधिक अमीर होता जा रहा है और गरीब और अधिक गरीब।

क्या हमने उन लाखों बच्चों को नहीं देखा है जो प्रात:काल होते ही गले में झोला डालकर कूड़ा-कर्कट बीनने-नंगे पांव अपने घरों से निकल पड़ते हैं? क्या हमने उन लाखों माताओं-बहनों को नहीं देखा जो तीर्थ-स्थानों पर भीख मांगती हुई नजर आती हैं? कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, इलाहाबाद, रामेश्वरम् आदि तीर्थस्थानों पर स्थिति इतनी भयावह है कि जिसे हम देख नहीं सकते। हजारों तीर्थयात्री प्रतिदिन यहाँ पहुँचते हैं-जब वे खाना खाने के बाद अपनी जूठन फैंकते हैं तब भिखारी इन पर पक्षियों की तरह टूट पड़ते हैं। क्या हमने उन माताओं-बहनों को नहीं देखा जो नगरों महानगरों में रहने वाले धनी लोगों के घरों में झाड़ू-पोंछा का काम करती हैं। क्या हमने शनिवार के दिन लाखों बच्चों युवाओं को हाथों में कमण्डल लिए घर-घर, दुकान-दुकान मांगते हुए नहीं देखा है? क्या हमने मंगलवार एवं शनिवार के दिन मन्दिरों के सामने भीख मांगते हुए हजारों भिखारियों को नहीं देखा है? अवश्य देखा है। यह है भारत की तस्वीर। गांवों में लाखों खेतीहर मजदूर है जो जमींदारों के यहां बन्धुआ मजदूरों की तरह काम करते हैं। आज महानगरों में पंचतारा होटलों, शानदार भवनों, बहुमंजिला फ्लेटों की भरमार हो रही है, यहां की झुग्गी-झोपड़ियों का विस्तार हो रहा-क्या यह इस बात का संकेत नहीं कि अमीर और गरीब के बीच यह खाई निरन्तर बढ़ रही है।

इसीलिए संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि गरीबों की तादाद के मामले भारत दुनिया में पहले स्थान पर है। भारत में दुनिया के 32.9 प्रतिशत गरीब की आबादी रहती है। यह संख्या चीन, नाईजीरिया और बांग्लादेश के गरीबों से ज्यादा है। भारत में नवजात बच्चों की मृत्युदर विश्व में सबसे आगे है। आज भी भारत के 60 प्रतिशत लोग खुले में शौच जाते हैं। दुनिया का हर तीसरा गरीब भारत में रहता है।

आजादी के इन वर्षों में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश के विकास के लिए करोड़ों रुपये की राशि खर्च की गई लेकिन सर्वहारा वर्ग को विशेष लाभ नहीं हुआ। इन वर्षों में बड़े-बड़े उद्योग तो स्थापित हुए-करोड़ों रुपये का निवेश हुआ। लेकिन गरीब वर्ग गरीबी रेखा से नीचे रहा।

अब नए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। उनकी सरकार से यह अपेक्षा है कि वह लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दे ताकि बेरोजगार युवाशक्ति को रोजगार के अवसर मिले। वित्तमंत्री ऐसी आर्थिक नीतियां बनायें जिसका प्रत्यक्ष लाभ सर्वहारा वर्ग को हो। एक स्वतन्त्र देश में यदि आज भी लाखों लोग खुले आसमान के नीचे सोते हैं। सर्दी में ठिठुरते हैं और गर्मी से झुलसते हैं तो निश्चित रूप से भारत का भविष्य उज्ज्वल नहीं है।

कार्य कठिन है गरीबी की जंजीरों को तोड़ना लेकिन असम्भव नहीं है। नई सरकार को ऐसे कदम उठाने होंगे जिससे भारत में गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले समृद्ध होंगे।

कवि के शब्दों में—

हालत बदलने में बहुत देर नहीं है,
कुदरत के उसूलों में उल्ट फेर नहीं है।
आगाज से अंजाम ने हंसकर कहा कि दोस्त,
मालिक के यहाँ देर है, अन्धेर नहीं है॥

वैदिक संस्कृति व सभ्यता का संवाहक गुरुकुल कालवा

आर्षग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन संस्कृति का प्रचार-प्रसार तथा उसकी रक्षा का एक ऐसा त्रिवेणी संगम है, जहां देश के सुदूर प्रान्तों से ज्ञानपिपासु आकर स्नान करते हैं, यहां से अब तक देश भर के सैकड़ों आचार्यों ने अपने ज्ञान पिपासा को शान्त करके अपने आपको धन्य किया तथा आज वे समाज में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में समाज सुधारक कर्मठ योगी पुरुषार्थी तथा विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् के रूप में यत्र तत्र प्रतिष्ठित हैं। इन विद्वानों के सामाजिक गतिविधियों से जनता जनार्दन जिस प्रकार से लाभान्वित हो रहा है, उसके पीछे नि:सन्देह गुरुकुल कालवा रूपी त्रिवेणी संगम का महत्त्व पूर्ण योगदान है। अत: इस पवित्र संस्था से जुड़े समस्त दानी सहयोगी हितैषी महानुभाव अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं, क्योंकि इन्हीं महानुभावों के कारण इतना बड़ा कार्य सम्पन्न हो रहा है।

आर्यजगत् की यह विश्वप्रसिद्ध संस्था गुरुकुल कालवा जिसके संचालक स्वयं कर्मयोगी, तपोनिष्ठ, गोभक्त, जनता के दर्द को अपने में अनुभव करने वाले पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज हैं, जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों पर आधारित है। जैसा कि महर्षि जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में संकेत किया है कि पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की बालिका का भी प्रवेश न हो तो इस बात का यथावत् पालन करते हुये पूज्य आचार्यश्री ने सैकड़ों युवाओं के जीवन को पवित्र करके धुरन्धर विद्वानों का निर्माण करके देश-विदेश में वैदिक संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं। अब आचार्य श्री कुछ अस्वस्थ चल रहे हैं, अत: हम सबका कर्त्तव्य है कि ऐसी विकट परिस्थिति में परमेश्वर से प्रार्थना करें तथा यथायोग्य सहयोग प्रदान करें जिससे कि पूज्य गुरुवर्य आचार्य बलदेव जी महाराज का शीघ्रातिशीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो ताकि उनकी अमृतमयी प्रेरणा लाखों व्यक्तियों के जीवन में ऊर्जा का संचार करने में घृत का कार्य कर सके और वे विश्व के कल्याणकारी कार्यों में पूर्ण योगदान दे सकें। वर्तमान में गुरुकुल कालवा का समस्त कार्यभार सुयोग्य शिष्य आचार्य राजेन्द्र जी निर्वहन कर रहे हैं। पूज्य गुरुवर्य आचार्य बलदेव जी महाराज के पदचिह्नों पर चलने वाले हमारे प्रिय आचार्य राजेन्द्र जी से यहां पर अनेक पठित कुलीन घरों से आये ब्रह्मचारी अष्टाध्यायी व्याकरण महाभाष्य आदि संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन कर रहे हैं। आचार्य जी ने नि:स्वार्थ भाव से अपने गुरु की आज्ञा का तत्परता पूर्वक परिपालन कर रहे हैं। हम सब अन्तेवासी ब्रह्मचारीगण उनके पवित्र संरक्षण, मार्गदर्शन, अध्यापन से अत्यन्त प्रसन्न हैं।

गुरुकुल का परिसर जहां एकान्त सुरम्य वातावरण में स्थित है वहाँ अनेक देशभक्त संस्कृत पिपासु युवकों के लिए एक आदर्श केन्द्र है। विविध विशिष्टताओं से युक्त इस गुरुकुल का यथातथ्य वर्णन करने में मेरी लेखनी इस समय असमर्थ है। अत: श्रद्धालु महानुभाव इस पवित्र संगम में स्नान करने अवश्य पधारें तथा तन-मन-धन से अपनी पवित्र आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

प्रस्तुत प्रसंग में मनुस्मृतिकार के निम्न श्लोक स्मरणीय हैं—

न विद्यया विना सौख्यं नराणां जायते ध्रुवम्।
अतो धर्मार्थ मोक्षेभ्यो विद्याभ्यासं समाचरेत्॥

—ब्रह्मचारी भीमदेव:
गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।